

भारतीय सन्दर्भ में जनसंख्या का बहुआयामी रोजगारपरक मूल्यांकन

¹डॉ. मधुसूदन त्रिपाठी, ²रूपाली चौधरी

¹वाणिज्य संकाय, एस.एस.वी.(पी.जी.) कॉलेज, हापुड़

²शोध विद्यार्थी, वाणिज्य संकाय, एस.एस.वी.(पी.जी.) कॉलेज, हापुड़

शोधसार- रोजगार के सृजन से ही देश के नागरिकों को आजीविका तथा जीवन स्तर प्रदान किया जा सकता है। भारत, विश्व का सर्वाधिक युवा जनसंख्या वाला देश है, लेकिन रोजगार के सापेक्ष अभाव तथा महानगरीकरण की प्रक्रिया ने देश के समक्ष बेकारी की जटिल चुनौती उत्पन्न कर दी है। इस चुनौती से, रोजगार के नवीन अवसर सृजित करके तथा दक्षता में परिमाणमात्मक एवं गुणावतात्मक वृद्धि करके मुक्ति पाई जा सकती है।

उद्देश्य- विश्व के दूसरे सर्वाधिक जनसंख्या बहुल देश, भारत की जनसंख्या का रोजगार की दृष्टि से अध्ययन करना तथा रोजगार उपलब्ध कराने के लिए विकल्प तथा सुझाव प्रस्तुत करना।

मुख्य बिन्दु- भारत की संरचना, भारत की जनसंख्या, भारतीय सन्दर्भ में रोजगार सम्बन्धी विविध आयाम, रोजगार सृजन में बाधाएं तथा सुझाव

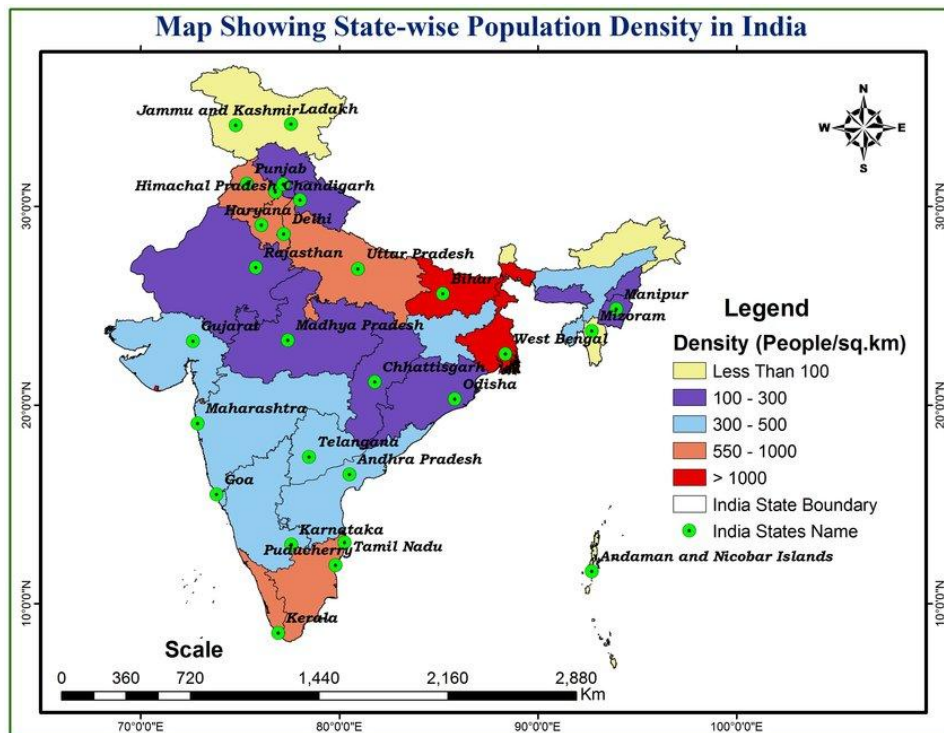
प्रस्तावना-

भारत, एशिया महाद्वीप के दक्षिण में स्थित विश्व का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या बहुल देश है। इसकी वर्तमान सीमाएं पाकिस्तान, बंगलादेश, चीन, नेपाल, भूटान, श्रीलंका, म्यांमार से मिलती हैं। यह तीन ओर से जल से घिरा होने के कारण भारतीय उपमहाद्वीप कहा जाता है। इसके उत्तर में हिमालय तथा दक्षिण में हिन्द महासागर है जिसका नामकरण भारत के अन्य नाम हिन्द पर हुआ है। क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत विश्व में 7वें स्थान पर है। इसका क्षेत्रफल 3,287,263 वर्ग किमी. है।¹ इसकी भू-सीमा 15,200 किलोमीटर व जल सीमा 7,516.6 किलोमीटर है। इसे प्रशासनिक दृष्टि से 28 राज्यों तथा 8 केन्द्र शासित प्रदेशों में विभाजित किया गया है। इसकी जनसंख्या 1.4073 बिलियन(2022 में) है। भारत की राजधानी नई दिल्ली है तथा सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा हिन्दी है। वैश्विक मानव विकास सूचकांक के अनुसार भारत का विश्व में 132 वां स्थान है।²

भारत की जनसंख्या (2021) -

जनसंख्या	1.3 बिलियन
ग्रामीण जनसंख्या	64.61 %
नगरीय जनसंख्या	35.39 %
0-14 आयु वर्ग की जनसंख्या	25.78%
15-64 आयु वर्ग की जनसंख्या	67.45 %
65 वर्ष से अधिक की जनसंख्या	6.77 %
महिलाओं का प्रतिशत	48.04 %
पुरुषों का प्रतिशत	51.96 %
जनसंख्या वृद्धि दर	1 %
जनघनत्व	468.7 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी.
जन्म दर	17.4 प्रति 1000 लोग
मृत्यु दर	7.3 प्रति 1000 लोग
प्रजनन दर	2.2 प्रति महिला

भारत में प्रान्तवार जनसंख्या का घनत्व:



स्पष्ट है कि कुछ क्षेत्रों में जनसंख्या का घनत्व बहुत कम तथा कुछ में बहुत अधिक है। भारत में जनघनत्व का अधिकांश दबाव मैदानी क्षेत्रों में है। स्वतन्त्रता के बाद नगरीकरण की तीव्र प्रक्रिया ने नगरों में जनसंख्या के घनत्व को अत्यधिक बढ़ा दिया है और यह घनत्व निरन्तर बढ़ रहा है। भारत में ग्रामीण क्षेत्रों से कस्बों की ओर, कस्बों से नगरों की ओर, नगरों से महानगरों की ओर जनसंख्या का अन्तरण तेजी से हो रहा है। देश में नगरीकरण की अपेक्षा महानगरीकरण की प्रवृत्ति अधिक प्रबल है। महानगरीकरण की इस प्रवृत्ति ने रोजगार के स्वरूप तथा समस्या को जटिल बना दिया है।

भारत की जनसंख्या

(ग्रामीण तथा नगरीय)^{*3}

वर्ष	ग्रामीण जनसंख्या	नगरीय जनसंख्या
1961	82%	18%
1971	80%	20%
1981	76.7%	23.3%
1991	74%	26%
2001	72.6%	27.4%
2011	68.9%	31.1%
2021	64.61%	35.39%

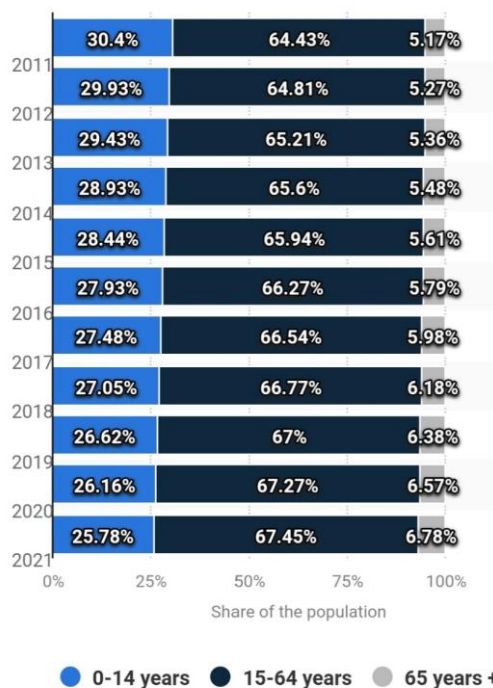
1961 में ग्रामीण जनसंख्या 82 प्रतिशत थी जो 2021 में घटकर 64.61 प्रतिशत हो गई, इसी के सापेक्ष 1961 में नगरीय जनसंख्या 18 प्रतिशत थी जो 2021 में बढ़कर 35.39 प्रतिशत हो गई। ग्रामों से नगरों की ओर जनसंख्या के इस अन्तरण के कारण ग्रामों में पलायन की स्थिति तथा नगरों में संकेन्द्रण की स्थिति उत्पन्न हो गई है। नगरों में जनसंख्या के बढ़ते घनत्व के कारण नगरीय रोजगार का स्वरूप विशिष्ट तथा जटिल हो गया है। ग्रामीण क्षेत्रों से रोजगार की खोज में नगरों की ओर पलायन ने ग्रामों में कार्यशील शक्ति का अभाव उत्पन्न कर दिया है।

भारत की जनसंख्या

(आयु वर्ग के अनुसार विभाजन)

वर्ष	आयु वर्ग		
	0-14वर्ष	15-64वर्ष	65 से अधिक
2011	30.4%	64.43%	5.17%
2012	29.93%	64.81%	5.27%
2013	29.43%	65.21%	5.36%
2014	28.93%	65.6%	5.48%
2015	28.44%	65.94%	5.61%
2016	27.93%	66.27%	5.79%
2017	27.45%	66.54%	5.98%
2018	27.05%	66.77%	6.18%
2019	26.62%	67%	6.38%
2020	26.16%	67.27%	6.57%
2021	25.78%	67.45%	6.77%

भारत की जनसंख्या (आयु वर्ग के अनुसार विभाजन)



विश्व का दूसरा सर्वाधिक जनसंख्या वाला देश होने के साथ ही भारत, विश्व का सबसे युवा देश भी है। प्रथम स्थान पर आने वाले चीन की जनसंख्या भारत से संख्यात्मक रूप में अधिक है, लेकिन सबसे अधिक युवा जनसंख्या भारत में है। किसी देश की अर्थव्यवस्था तथा आर्थिक विकास क्रियाशील मानव संसाधन पर निर्भर है। इस दृष्टि से भारत विराट युवा मानव शक्ति का धारक है।

साहित्य की समीक्षा :

ब्लूम एंड केनिंग (2004) ने जर्नल ऑफ लेबर इकोनॉमिक्स में अपने लेख में यह माना कि यदि बढ़ती जनसंख्या का उचित नियोजन तथा प्रशिक्षण किया जाये तो यह देश के विकास में सकारात्मक योगदान करेगी। उन्होंने दर्शाया कि इस सकारात्मकता को सुदृढ़ संस्थानों, लचीले श्रम विधानों तथा व्यापार एवं उद्योग के उदारीकरण के माध्यम से स्थापित किया जा सकता है। यदि ऐसा नहीं होता तो स्थिति नकारात्मक व चिंताजनक हो जाएगी।⁴

विश्व बैंक (2010) के प्रतिवेदन के अनुसार, भारत में कम वेतन वाली, अपेक्षाकृत अनुत्पादक, अनौपचारिक क्षेत्र की नौकरियों का श्रम बाजारों पर आधिपत्य है। अनौपचारिक क्षेत्र, भारत के श्रम बाजार पर छाया हुआ है। अनुमान है कि आगामी अवधि में यह स्थिति बनी रहेगी।⁵

भारतीय अर्थव्यवस्था पर्यवेक्षण केन्द्र (CMIE) (2021) ने अपने प्रतिवेदन में प्रतिपादित किया कि भारत में 7.9 प्रतिशत रोजगार के अवसरों को तत्काल उत्पन्न करने की आवश्यकता है ताकि ज्वलन्त और सक्रिय युवा बेरोजगारों को तात्कालिक राहत दी जा सके।⁶

भारतीय सन्दर्भ में रोजगार सम्बन्धी विविध आयाम

रोजगार: कोई भी व्यक्ति, जो शारीरिक तथा मानसिक रूप से कार्य करने में समर्थ है, किसी कार्य का इच्छुक तथा योग्य है तथा जीविकोपार्जन के लिए कार्य कर रहा है, उसे रोजगार कहा जा सकता है।

रोजगार क्षेत्र के तीन आयाम हैं -



प्राथमिक क्षेत्र (यथा - कृषि, पशुपालन आदि)



द्वितीयक क्षेत्र (यथा- उत्पादन, खनन आदि)



तृतीयक क्षेत्र (यथा- सेवा, पेशा, तकनीकी आदि)

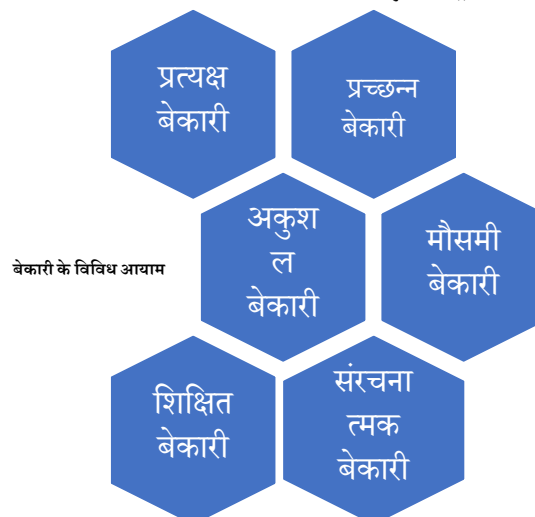
भारत में विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत जनशक्ति (प्रतिशत में) ⁷

रोजगार क्षेत्र	1972-1973	1983-1984	1993-1994	2009-2010	2019-2020
प्राथमिक क्षेत्र	74.2%	68.1%	63.9%	53.1%	42.6%
द्वितीयक क्षेत्र	11.2%	13.7%	14.9%	21.5%	25.12%
तृतीयक क्षेत्र	14.6%	18.2%	21.2%	25.4%	32.28%

1972-1973 में 74.2 प्रतिशत कार्यशील जनसंख्या अपनी आजीविका के लिए प्राथमिक क्षेत्र पर निर्भर थी लेकिन 1991 में उदारीकरण अपनाये जाने के बाद, प्राथमिक, द्वितीयक तथा तृतीय क्षेत्र में कार्यरत जनशक्ति के अनुपात में महत्वपूर्ण परिवर्तन आया है। यह 2020 के समको से स्पष्ट है।

बेकारी की चुनौती:

बेकारी वह स्थिति है जिसमें शारीरिक व मानसिक रूप से सक्षम व्यक्ति को, जो रोजगार की इच्छा रखता है, को प्रचलित मजदूरी दर पर कार्य नहीं मिलता है। बेकारी जीवनयापन का संकट उत्पन्न करती है तथा जनसंख्या की उत्पादनशीलता तथा महत्ता को निष्प्रभावी बना देती है। यह आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से राष्ट्र के समक्ष एक संकटपूर्ण चुनौती है। यह एक बहुआयामी संकल्पना है।



प्रत्यक्ष बेकारी में कार्य के इच्छुक व्यक्ति को कार्य प्राप्त नहीं होता, वहीं मौसमी बेकारी में व्यक्ति को मौसम विशेष में ही कार्य प्राप्त होता है शेष समय वह बेकार रहता है। प्रच्छन्न बेकारी में, बेकारी प्रत्यक्ष रूप में नहीं दिखती है, आवश्यकता से अधिक व्यक्तियों का किसी कार्य को करना ही प्रच्छन्न बेकारी कहा जाता है। भारत में कृषि क्षेत्र में यह प्रायः पायी जाती है। शिक्षित बेकारी में व्यक्ति को उसकी योग्यतानुसार कार्य नहीं मिलता। भारत में पंजीकृत बेरोजगारों में 60 प्रतिशत शिक्षित बेकार हैं।

रोजगार पंजीकरण केन्द्रों में प्रतिवर्ष पंजीकरण ⁹

वर्ष	रोजगार पंजीकरण केन्द्रों की संख्या	पंजीकरण (हजार में)	ऑनलाइन पंजीकरण (हजार में)	ऑनलाइन पंजीकरण में वार्षिक वृद्धि(प्रतिशत में)
2010	969	6186	38826.9	1.8
2011	966	6206.3	40171.6	3.5
2012	956	9722.2	44790.1	11.5
2013	956	5969.4	46802.5	4.5
2014	978	5975.2	48261.1	3.1
2015	978	6939.4	43502.7	-9.9
2016	997	5959.9	43376.1	-0.3
2017	997	3948.9	42444.9	-2.1
2018	997	3831.8	42122.3	-0.8
2019	997	3455	42405.1	0.7
2020	997	2073.9	42829.2	0.9

स्पष्ट है युवा वर्ग रोजगार प्राप्ति की आशा के साथ रोजगार केन्द्र में पंजीकरण कराते हैं, किन्तु रोजगार प्राप्त करने वालों का प्रतिशत काफी कम है।

रोजगार की आवश्यकता के सन्दर्भ में जब भी बात होती है तो केवल युवाओं के बारे में, जबकि तथ्य यह है कि रोजगार की जितनी आवश्यकता युवा वर्ग को है उतनी ही वरिष्ठ नागरिकों को भी है। इनमें भी उनकी संख्या अधिक है जिनके पास कोई विशेष डिग्री या प्रशिक्षण नहीं है। शिक्षा का स्तर कम होने के कारण वे केवल कौशल सम्बन्धी कार्य कर सकते हैं तथा इसके लिए भी उन्हें प्रशिक्षण की आवश्यकता है। जिसका प्रबन्ध भारत सरकार द्वारा उतने बड़े स्तर पर नहीं किया गया है, जितने की आवश्यकता है।

भारत में बेकारी का एक प्रमुख कारण अकुशल श्रमिकों का होना भी है। अभी भी कुशल तथा प्रशिक्षण प्राप्त मानव संसाधन की कमी है। इन अकुशल श्रमिकों के कार्य में निम्न उत्पादकता देखने को मिलती है जिससे आर्थिक विकास में इनका योगदान अपेक्षा से कम होता है। यदि यही व्यक्ति प्रशिक्षण प्राप्त कर कार्य को करें तो भारत की विकास की दर में बहुत अधिक सकारात्मक परिवर्तन हो सकता है।

भारत में बेकारी ⁹

वर्ष	बेरोजगारी दर(प्रतिशत में)	युवा बेरोजगारी दर (प्रतिशत में)	वर्ष	बेरोजगारी दर(प्रतिशत में)	युवा बेरोजगारी दर (प्रतिशत में)
2021	5.98	28.26	2010	5.55	19.47
2020	8	24.9	2009	5.54	18.94
2019	5.27	22.74	2008	5.28	18.5
2018	5.33	23.05	2007	5.32	18.11
2017	5.36	22.58	2006	5.45	18.07
2016	5.42	22.24	2005	5.6	18.1
2015	5.44	21.74	2004	5.67	18.16
2014	5.44	21.22	2003	5.73	18.2
2013	5.42	20.68	2002	5.72	18.14
2012	5.41	20.17	2001	5.66	17.89
2011	5.43	19.66	2000	5.66	17.83

वर्ष 2000 में बेरोजगारी दर 5.66 प्रतिशत है जोकि 2021 में 5.98 प्रतिशत है। बेरोजगारी दर में इस कालखण्ड (2000-2021) में अधिक परिवर्तन नहीं हुआ है। लेकिन युवा बेरोजगारी दर जो 2000 में 17.83 प्रतिशत थी वह 2021 में बढ़कर 28.26 प्रतिशत हो गई। यह बढ़ी हुई दर चिंताजनक तथा चुनौतीपूर्ण है।

भारत में मानव संसाधन ¹⁰

(रोजगार तथा शैक्षिक आधार पर)



व्यक्ति को प्राप्त शिक्षा तथा प्रशिक्षण उसके कार्य पर विशेष प्रभाव डालते हैं, भारत में कार्यरत श्रमिकों में साक्षरता तो है परन्तु उनमें गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण का अभाव पाया जाता है। बेकारी भी इसी वर्ग में अधिक है।

निष्कर्ष-

1. भारतीय जनसंख्या, बेकार तथा अकुशल लोगों का विराट जमावड़ा बनी हुई है। अकुशल मानव शक्ति को कुशल बनाने के लिए या तो प्रयास नहीं हुए या अपर्याप्त प्रयास हुए हैं। इस सम्बन्ध में, उत्तर प्रदेश पुलिस में चपरासी की भर्ती का उदाहरण लिया जा सकता है जिसने रोजगार उपलब्धि के विद्रूप को सामने ला दिया है। चपरासी के अकुशल पद के लिए 5वीं कक्षा पास होना न्यूनतम योग्यता रखी गई थी। कुल पद 62 थे। विज्ञापन के प्रत्युत्तर में 93 हजार आवेदन आये। जिसमें 7400 अभ्यर्थी ही 5वीं कक्षा से 12 वीं कक्षा के बीच के थे। अन्य में 3740 पीएच.डी. थे। यह उदाहरण देश में रोजगार की चिंताजनक स्थिति को दर्शाता है।¹¹
2. देश में कुशल मानव शक्ति की उपलब्धता है लेकिन इसके साथ गुणवत्ता का प्रश्न भी महत्वपूर्ण है। अनेक बार कुशलता की सार्थकता पर प्रश्न उठते हैं। इस सम्बन्ध में उत्तर प्रदेश लोक सेवा आयोग, प्रयागराज का उदाहरण उल्लेखनीय है। इसमें 'संगणक व्यवस्था प्रबन्धक' के 1 पद के लिए 2129 आवेदन प्राप्त हुए। किन्तु आयोग को मानकों के अनुसार एक भी योग्य अभ्यर्थी नहीं मिला। यह उदाहरण दक्षता की निम्न गुणवत्ता को सामने लाता है।¹²
3. एक गम्भीर चुनौती मानव शक्ति के अवैध आब्रजन की है। शेष विश्व में अशान्ति के चलते बंगलादेश, म्यांमार, नेपाल, पाकिस्तान, अफ्रीका, चीन आदि देशों से अवैध आब्रजन हो रहा है। देश के विभिन्न स्थानों में, बंगलादेश के अवैध घुसपैठियों की अवैध बस्तियाँ देखी जा सकती हैं। इन अवैध घुसपैठियों ने देश के नागरिकों के रोजगार को हड़पकर रोजगार की चुनौती को और अधिक भयंकर बना दिया है, विशेषकर अकुशल श्रम के क्षेत्र में। ये अवैध प्रवासी अत्यधिक कम मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं। रोजगार प्रदाता, लागत घटाने के लिए इन अवैध घुसपैठियों को प्राथमिकता देते हैं, जिससे रोजगार के वास्तविक अधिकारी भारतीय नागरिकों को रोजगार नहीं मिल पाता।
4. भारतीय जनसंख्या को रोजगार उपलब्ध कराने के सारे प्रयास युवाओं को ध्यान में रखकर किये जा रहे हैं, जबकि वरिष्ठ नागरिकों को भी जीवनयापन करने के लिए रोजगार की आवश्यकता युवाओं के समान ही है। भारत में वरिष्ठ नागरिकों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए कोई कार्य योजना सार्थक रूप में नहीं है।
5. सेवायोजन केन्द्रों में सामान्यतः अकुशल अथवा अर्द्धकुशल मानव शक्ति के पंजीकरण किये जाते हैं, यह प्रयास अधूरा है। ऐसे विशिष्ट सेवायोजन केन्द्र स्थापित किये जायें जहाँ दक्षता आधारित पंजीकरण हो। जहाँ से आवश्यकता पड़ने पर विशिष्टीकरण प्राप्त लोगों को लिया जा सके।
6. रोजगार के क्षेत्र में मानव शक्ति की माँग तथा आपूर्ति के अनुमानों में समन्वय की कोई प्रभावी व्यवस्था नहीं है। इसका परिणाम यह होता है कि किसी क्षेत्र में विशिष्टीकरण आधारित मानव शक्ति की अधिकता हो जाती है, तथा अन्य क्षेत्र में मानव शक्ति की न्यूनता हो जाती है। रोजगार के अवसरों का यह असन्तुलन प्रायः देखा जाता है।
7. सरकारों द्वारा केवल परम्परागत क्षेत्रों में रोजगार सृजन के प्रयास किये जा रहे हैं। नये तथा अपूर्व रोजगारों की संकल्पना के सार्थक प्रयास बहुत कम हैं।

सुझावः

1. भारतीय जनसंख्या का एक बहुत बड़ा अंश अकुशल मानव शक्ति के रूप में है। इस अकुशल मानव शक्ति को कुशल मानव शक्ति में परिवर्तित करने के लिए दृढ़ संकल्प के साथ समयबद्ध प्रयास तत्काल आरम्भ किये जाने चाहिए।
2. देश में कुल जनसंख्या के अनुपात में कुशल मानव शक्ति न्यूनानुसार रूप में उपलब्ध है किन्तु इस उपलब्ध कुशल श्रम शक्ति की गुणवत्ता निर्धारित उच्च प्रमाणों के अनुसार नहीं है। मानव संसाधन को कुशल बनाने के प्रयासों को अधिक विस्तृत तथा गुणवत्तापरक बनाया जाना चाहिए।
3. बंगलादेश, भूटान, नेपाल आदि देशों से अवैध आब्रजन के कारण भारतीय नागरिकों के समक्ष रोजगार का संकट और अधिक गहराता जा रहा है। ये अवैध बाहरी मजदूर बहुत कम मजदूरी पर काम करने के लिए तैयार हो जाते हैं, जिससे स्थानीय भारतीय नागरिकों को रोजगार नहीं मिल पाता। यदि मिलता भी है तो बहुत कम मजदूरी पर जोकि जीवनयापन के लिए पर्याप्त नहीं होती। इस अवैध घुसपैठ को तत्काल रोकना चाहिए ताकि भारतीय नागरिकों को रोजगार की सुलभता संभव हो सके।
4. वरिष्ठ नागरिकों को भी युवाओं के समान ही रोजगार की आवश्यकता होती है तथापि सभी केन्द्रों पर सामान्यतः युवाओं को प्राथमिकता दी जाती है। यह स्थिति उचित नहीं कही जा सकती। वरिष्ठ नागरिकों को रोजगार उपलब्ध कराने के लिए व्यापक कार्ययोजना आरम्भ की जानी चाहिए। इनके लिए 'घर से कार्य' (वर्क फ्रॉम होम) जैसे प्रयास आरम्भ किये जाने चाहिए।
5. रोजगार के क्षेत्र में श्रम विभाजन तथा विशिष्टीकरण परक वर्गीकरण किया जाना चाहिए। प्रत्येक क्षेत्र में आगामी काल में, रोजगार सृजन के अनुमान लगाये जाने की व्यवस्था हो तथा अनुमानों के अनुसार श्रम शक्ति की आपूर्ति सुनिश्चित की जानी चाहिए।
6. रोजगार के नये तथा अपूर्व क्षेत्रों की अभिकल्पना कर उनको साकार करने के लिए प्रत्येक प्रयास किया जाना चाहिए, तभी पूर्ण रोजगार की स्थिति को प्राप्त किया जा सकता है। इस सम्बन्ध में ताइवान का उदाहरण दिया जा सकता है, प्रत्येक इलेक्ट्रॉनिक सामान में चिप का प्रयोग होता है। ताइवान द्वारा इस नवीन संभावना को पहचाना गया और चिप निर्माण से सम्बन्धित औद्योगिक तथा मानवीय संरचना निर्मित की गयी। वर्तमान में ताइवान द्वारा सम्पूर्ण विश्व की आवश्यकता के 99 प्रतिशत चिप की आपूर्ति की जा रही है। ऐसे ही नवीन रोजगार क्षेत्रों के प्रवर्तन के लिए सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर भीगैर प्रयास भारत में किये जाने चाहिए।

सन्दर्भ सूची-

1. वार्षिकी भारत (2011), भारत सरकार, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, पृष्ठ 334, नई दिल्ली
2. प्रतिवेदन वैश्विक मानव विकास सूचकांक (2022), संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम, न्यूयार्क
3. कुमार हरेन्द्र (2020), ग्रामीण भारत में वर्तमान जनसंख्या परिदृश्य, पॉपुलेशन एक्सप्लोजन फूड सिक्योरिटी एण्ड सस्टेनेबल डेवलपमेंट, पृष्ठ- 72-82, मेरठ
4. ब्लूम एण्ड कैनिंग (2014), इण्डियन जर्नल ऑफ लेबर इकोनॉमिक स्टडीज, वॉल्यूम 57, नम्बर 1, नई दिल्ली
5. बैंक विश्व (2010) इंडियाज एम्प्लॉयमेंट चैलेंज- क्रिएटिंग जॉब, हेलिपिंग वर्कर्स, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, पृष्ठ 3-8, ऑक्सफोर्ड
6. शर्मा योगिमा (2022), द इकोनॉमिक टाइम्स, 20 जनवरी 2022, नई दिल्ली
7. नील ओ (2022), डिस्ट्रीब्यूशन ऑफ द वर्क फोर्स एंफ्रॉस इकोनामिक सेक्टर ऑफ इंडिया, नई दिल्ली
8. प्रतिवेदन वार्षिक (2021), रोजगार कार्यालय, भारत सरकार, पृष्ठ 24, नई दिल्ली
9. पेज वेब (2022), एम्प्लॉयमेंट रेट इन इण्डिया, स्टेटिस्टा, नई दिल्ली
10. प्रतिवेदन वार्षिक, भारत सरकार, श्रम मंत्रालय, वॉल्यूम 3, नई दिल्ली
11. राजस्थान पत्रिका (2022), बेरोजगारी का आलम, 20 मई 2021, जयपुर
12. जागरण दैनिक (2022), एक पद, 2129 आवेदन फिर भी योग्य ना मिला,
13. सितम्बर 2022, नई दिल्ली